मुद्रा के मूल्य की अवधारणा
(CONCEPT OF VALUE OF MONEY)

अर्थशास्त्र में मुद्रा के वाक्यांश का प्रयोग तीन अर्थों में होता है जैसा कि नीचे चार्ट में दर्शाया गया है :

मुद्रा का मूल्य

- **ब्याज की दर** (Rate of Interest) (ऋणों में मुद्रा का उपयोग करने के फलस्वरूप ब्याज के रूप में जो आय प्राप्त होती है)
- **विदेशी विनिमय** (Foreign Exchange) (मुद्रा का बाह्य मूल्य)
- **क्रय-शक्ति** (Purchasing Power) (मुद्रा की सामान्य क्रय-शक्ति)

मुद्रा-मूल्य का अर्थ (Meaning of Value of Money)—अर्थशास्त्रियों द्वारा मुद्रा-मूल्य को तीन अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है—(i) मुद्रा-मूल्य का आशय ब्याज दर से लगाया जाता है, (ii) मुद्रा-मूल्य से अभिप्राय उसकी विनिमिय दर से है और (iii) मुद्रा का मूल्य उसकी क्रय शक्ति से है। हमें अपनी दृष्टि से तीसरे अर्थ में ही मुद्रा का मूल्य व्यक्त करना है। जिस प्रकार हम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य द्रव्य या मुद्रा में व्यक्त करते हैं, ठीक उसी प्रकार मुद्रा का मूल्य वस्तुओं और सेवाओं की वह मात्रा है जो मुद्रा की एक इकाई के बदले में प्राप्त होती है।

इस प्रकार मुद्रा के मूल्य का अभिप्राय मुद्रा की **क्रय-शक्ति** से है अर्थात् "मुद्रा की एक निश्चित इकाई के बदले में जितनी वस्तुएँ और सेवाएँ क्रय की जाती हैं, वही मुद्रा का मूल्य है।" इसे उपभोग मूल्य (Consumption Value) भी कहते हैं।

परिभाषाएँ (Definitions)

मुद्रा के मूल्य की कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्नलिखित हैं :

(1) **प्रो. क्राउथर** के अनुसार, "मुद्रा के मूल्य से अभिप्राय उसकी क्रय-शक्ति से होता है।"[1]

(2) **रॉबर्ट्सन** के अनुसार, "मुद्रा के मूल्य से हमारा तात्पर्य वस्तुओं की उस मात्रा से होता है जो सामान्य रूप से एक इकाई के बदले में प्राप्त होती है।"[2]

(3) **फिशर** के अनुसार, "मुद्रा का मूल्य उसकी क्रय-शक्ति का बोध कराता है और इसलिए मुद्रा की क्रय-शक्ति का अध्ययन मूल्य-स्तरों के समान है।"

मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त : व्यावसायिक दृष्टिकोण (फिशर)
[QUANTITY THEORY OF MONEY : THE TRANSACTIONS APPROACH (FISHER)]

यद्यपि मुद्रा परिमाण सिद्धान्त के बारे में **डेविड ह्यूम, एडम स्मिथ, रिकार्डो, जे. एस. मिल** आदि अर्थशास्त्रियों ने अपने विचारों को व्यक्त किया है लेकिन **प्रो. फिशर** (Fisher) ने इस सिद्धान्त को लोकप्रिय बनाया है। वर्तमान

Scanned with CamScanner

में मिल्टर फ्रीडमैन ने जिन्हें सन् 1976 में अर्थशास्त्र में विशेष योगदान के कारण नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया था, मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त को नया रूप प्रदान किया।

प्रो. इरविंग फिशर ने 1911 में प्रकाशित अपनी पुस्तक '*The Purchasing Power of Money*' में मुद्रा परिमाण सिद्धान्त के नगद व्यवसाय दृष्टिकोण या व्यावसायिक दृष्टिकोण (Transaction Approach) का प्रतिपादन किया है।

परिभाषाएँ और व्याख्या (Definitions & Explanation)—मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त से यह ज्ञात होता है कि **मुद्रा के परिमाण और सामान्य कीमत-स्तर में प्रत्यक्ष आनुपातिक सम्बन्ध होता है**। इस सिद्धान्त की प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :

(1) **फिशर** के अनुसार, "मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त के अनुसार अन्य बातें स्थिर रहने पर जब चलन में मुद्रा का परिमाण बढ़ता है तो कीमत-स्तर भी प्रत्यक्ष अनुपात में बढ़ता है तथा मुद्रा का मूल्य कम हो जाता है।"[1]

(2) **प्रो. टॉजिंग** के अनुसार, "अन्य बातों के समान रहने पर मुद्रा की मात्रा दुगुनी कर देने से कीमतें पहले से दुगुनी हो जायेंगी और मुद्रा का मूल्य आधा रह जायेगा। अन्य बातें समान रहने पर मुद्रा की मात्रा आधी कर देने से कीमतें आधी रह जायेंगी और मुद्रा का मूल्य पहले से दुगुना हो जायेगा।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं :

(1) **मुद्रा के परिमाण तथा सामान्य कीमत-स्तर में प्रत्यक्ष आनुपातिक सम्बन्ध** होता है।

(2) **मुद्रा के परिमाण तथा मात्रा तथा मुद्रा के मूल्य में विपरीत समानुपातिक सम्बन्ध** होता है।

इसी तथ्य को नीचे सारणी में अंकों के द्वारा स्पष्ट किया गया है :

सारणी 1 : मुद्रा तथा वस्तु का नाम

स्थिति	मुद्रा की मात्रा (M)	वस्तुओं एवं सेवाओं की मात्रा (T)	सामान्य कीमत-स्तर (P)	मुद्रा का मूल्य
प्रथम	10	10	$\frac{M}{T} = \frac{10}{10} = 1$	$\frac{1}{P} = \frac{1}{1} = 1$
द्वितीय	20 (दो गुना)	10	$\frac{M}{T} = \frac{20}{10} = 2$	$\frac{1}{P} = \frac{1}{2} = 0.5$ (आधा)
तृतीय	5 (आधा)	10	$\frac{M}{T} = \frac{5}{10} = .5$	$\frac{1}{P} = \frac{1}{.5} = 2$ (दो गुना)

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि (i) मुद्रा की मात्रा दुगुनी हो जाती है तो सामान्य कीमत-स्तर भी दुगुना हो जाता है परन्तु मुद्रा का मूल्य आधा रह जाता है।

(ii) इसके विपरीत, जब मुद्रा की मात्रा 10 से घटकर 5 रह जाती है अर्थात् आधी रह जाती है तो सामान्य कीमत-स्तर भी घटकर आधा हो जाता है परन्तु मुद्रा ...